ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

द्वारा

'तुलसीदास की सामाजिक दृष्टि '

विषय पर दिनांक: 31 अगस्त, 2018 को आयोजित विशेष व्याख्यान

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 31 अगस्त, 2018 को 'तुलसीदास की सामाजिक दृष्टि' विषय पर विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने की। कार्यक्रम में कुलसचिव एवं हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह एवं केंद्र के संयुक्त निदेशक प्रो. अवधेश कुमार मंचासीन थे।

प्रो. तिवारी ने अपने व्याख्यान में रामायाण के विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए उसे लोक के साथ जोड़ा। उनका कहना था कि रामायण में परस्पर आदान-प्रदान संबंध, राम-सीता के रिश्ते, पर्यावरण और तुलसीदास, नारी दृष्टि और सामाजिक समता की दृष्टि से देखना चाहिए। उन्होंने रामायण में निहित अध्यात्म और दर्शन का भी विस्तार से उल्लेख किया। प्रो. रामजी तिवारी ने कहा कि यह देखना जरूरी है कि तुलसीदास वर्तमान युग की चुनौतियों से कैसे टकराते हैं। यानि कि आज वे हमें क्या मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि जबतक सत्ता रहेगी तबतक उनकी प्रासंगिकता कम नहीं हो सकती। तुलसीदास के चिंतन में राम ब्रह्म हैं लेकिन कविता में जननायक हैं। उन्हें खिन्न प्रिय हैं। जहाँ कोई दुखी है उसके पास वहाँ जाना चाहते हैं। तीन कुलों का वर्णन हैं- नरकुल, वानरकुल, दानवकुल। वे इनसे निकाले गये लोगों के उद्धार के लिए जा रहें हैं। भगवान दीनबंधु है, दरिद्रनारायण हैं। तुलसी एक लोकनायक का निर्माण कर रहें हैं जो अपने चरित्र से लोक को संभाल सके। वे ऐसे समन्वय में राम को प्रस्तुत करना चाहते हैं, जहाँ सब कोई शामिल हो सके। विचार और उच्चारण की संगति के लिए उन्होंने वाणी की प्रार्थना से मानस को शुरू किया। तुलसीदास जी हमेशा एक जरूरत से काव्य की रचना करते हैं। राम कथा के माध्यम से वे जनचेतना को शिक्षित करना चाहते हैं। विसेंट स्मिथ लिखते हैं उस समय दो शासक थे अकबर और तुलसीदास। तुलसी ने जिस राम का चित्रण किया है वह युगों-युगों तक रहेगा। बाईबिल के बाद यह सर्वाधिक अनुदित और स्वीकृत है। गांधी ने लिखा कि बचपन में तुलसी के रामायण का सबसे गहरा प्रभाव पड़ा। भक्तिकाल के साहित्य में तुलसी का 'मानस' सर्वोत्तम कृति है। मानवीय धरातल पर बड़े छोटे का भाव नहीं है, सब बराबर हैं। सारे विवाद और प्रवाद इसलिए खड़े होते हैं क्योंकि हम उसे संदर्भों से काटकर देखते हैं। अगर संदर्भों के साथ देखें तो रावण से अधिक विवेकशील मंदोदरी है। तारा बालि से अधिक विवेकशील है। तुलसी का साहित्य आज भी प्रतिकार का साहित्य है । तुलसी को इस बात की भी चिंता है कि कैसे गीत गाये जाएं। इक्कीस राग में गीतावली है। तुलसी ने

लोकप्रियता के लिए एक भाव की खोज की। तुलसी की कविता हित करने वाली है। वे साहित्य निर्माण के लिए दृष्टि भी देते हैं। रचना उनके लिए एक उपासना है। जितनी आदर्श शर्तें हैं वह सब उनके यहाँ एक क्रम से आती हैं। गोस्वामी जी सारे वैदुष्य के बाद जनपक्ष पर उतरते हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. प्रीति सागर ने गांधी जी के राम और महाकवि तुलसीदास के राम को व्याख्यायित करते हुए दोनों की अलग-अलग दृष्टि को लेकर अपनी बात रखी। कार्यक्रम का संचालन प्रो. अवधेश कुमार ने किया। इस अवसर पर अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।